eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION
RESEARCH ARTICLE

अखिल विश्व गायत्री परिवार के देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के अंतर्गत प्रथम अश्वमेध महायज्ञ जयपुर, राजस्थान (7 से 10 नवम्बर 1992) – एक अध्ययन

सौरभ श्रीवास्तव [1*]

[1] शोधार्थी, ओरिएंटल स्टडीज (दर्शनशास्त्र), देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

सारांश: वर्तमान समय में औद्योगीकरण और ऊर्जा उपयोग में वृद्धि के परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, तापमान की वृद्धि, ओज़ोन परत का नष्ट होना, वातावरण के असंतुलन, जैसी अनेक विषम समस्याएँ वैश्विक स्तर पर दृष्टिगोचर हो रही हैं। व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिदृष्य में मानवता की कमी, अनैतिकता, अवसाद, चिंता, क्रोध, आदि अनेक विसंगतियाँ देखने को मिलती हैं। इन सब विषमताओं के मूल में मानवीय संकीर्णता एवं संवेदनहीनता प्रमुख कारण ज्ञात होते हैं। अत: युग मनीषा को जागृत करना एवं नवसृजन में नियोजित कर देना वर्तमान युग की महती आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति में इस हेतु विभिन्न विधाएँ वर्णित हैं – इनमें से एक अति महत्वपूर्ण विधा है अश्वमेध यज्ञ। इसी संदर्भ में वर्तमान शोधपत्र में गायत्री परिवार द्वारा जयपुर में किए गए प्रथम अश्वमेध महायज्ञ का विस्तृत वर्णन किया गया है, जिससे उस–में निहित विभिन्न शिक्षाओं को उजागर करते हुए, वर्तमान समय में इनकी उपयोगिता समझी जा सके।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के देव संस्कृति दिग्विजय अभियान को साकार करने के लिए उनके स्थूल शरीर के प्रयाण के बाद, गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा जी ने अपनी हिमालय यात्रा के बाद, देव संस्कृति दिग्विजय आश्वमेधिक अभियान चलाया। अश्वमेध यज्ञ के आयोजन की पूर्व तैयारी (प्रयाज) में आते हैं बड़ी संख्या में नैष्ठिक साधकों का निर्माण जो इसके आयोजन में सहयोग करें एवं प्रतिभागिता करें, विभिन्न संस्कारित तीर्थों से जल रज का संकलन, जन–जन को इस यज्ञ के बारे में जागरूक करना एवं इसमें आमंत्रित करना। यह जयपुर के अश्वमेध महायज्ञ में भी किया गया। साथ ही अश्वमेध यज्ञ के आयोजन के दौरान (याज) विभिन्न कार्यक्रम किए गए, जैसे यज्ञ, संस्कार, विचार गोष्ठी, आदि, एवं इनमें लाखों व्यक्तियों ने प्रतिभागिता करी – इस प्रकार जन जन को देव संस्कृति का बोध कराया गया। अश्वमेध यज्ञ के आयोजन के उपरांत (अनुयाज) एक व्यवस्थित योजना बनाई गई थी एवं इस यज्ञ में उत्पन्न ऊर्जा का सुनियोजन व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र निर्माण हेतु किया गया था। नवंबर 1992 इस गायत्री परिवार द्वारा जयपुर में किए गया प्रथम अश्वमेध महायज्ञ वर्तमान समय की विभिन्न वैयक्तिक एवं वैश्विक समस्याओं के निवारण हेतु एक सशक्त माध्यम के रूप में किया गया। मनुष्य में देवत्व के उदय एवं राष्ट्र के नवनिर्माण के उद्देश्य को लेती हुई यह यात्रा 2024 तक 47 अश्वमेध करा चुकी है।

कूट शब्द: गायत्री परिवार, देव संस्कृति दिग्विजय अभियान, अश्वमेध यज्ञ, जयपुर

*CORRESPONDENCE
Address Research Scholar, Oriental Studies (Philosophy), Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, India.
Email
sorabh.shrivastava@dsvv.ac.in

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2024 Sorabh Shrivastava.
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

भूमिका

वर्तमान समय में औद्योगीकरण के नाम पर बने कारखानों ने संसार भर में वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण भर दिया है। अणु शक्ति की बढ़ोत्तरी ने विकिरण से वातावरण को इस कदर भर दिया है कि तीसरा युद्ध न हो तो भी भावी पीढ़ियों को अपंग स्तर की पैदा होना पड़ेगा। ऊर्जा के अत्यधिक उपयोग ने संसार का तापमान इतना बढ़ा दिया है कि हिम प्रदेश पिघल जाने पर समुद्रों में बाढ़ आने और ओजोन नाम से जानी जाने वाली पृथ्वी की कवच फट जाने पर ब्रह्माण्डीय किरणें धरती की समृद्धि को भूनकर रख सकती हैं। रासायनिक खाद और कीटनाशक मिलकर पृथ्वी की उर्वरता को विषाक्तता में बदलकर रखे दे रहे हैं। खनिजों का उत्खनन जिस तेजी से हो रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि कुछ ही दशाब्दियों में धातुओं का, खनिज तेलों का भण्डार समाप्त हो जाएगा। बढ़ते हुए कोलाहल से तो व्यक्ति और पगलाने लगेंगे। शिक्षा का उद्देश्य उदरपूर्ति भर रहेगा, उसका शालीनता के तत्त्वदर्शन से कोई वास्ता न रहेगा। आहार में समाविष्ट होती हुई स्वादिष्टता प्रकारान्तर से रोग-विषाणुओं की तरह धराशायी बनाकर रहेगी। कामुक उत्तेजनाओं को जिस तेजी से बढ़ाया जा रहा है, उसके फलस्वरूप न मनुष्य में जीवनी शक्ति का भण्डार बचेगा, न बौद्धिक प्रखरता और शील-सदाचार का कोई निशान बाकी रहेगा। पशु-पक्षियों और पेड़ों का जिस दर से कत्लेआम हो रहा है, उसे देखते हुए यह प्रकृति छूँछ होकर रहेगी। नीरसता, निष्ठुरता, नृशंसता, निकृष्टता के अतिरिक्त और कुछ पारस्परिक व्यवहार में कोई ऊँचाई शायद ही दीख पड़े। मूर्धन्यों का यह निष्कर्ष गलत नहीं है कि मनुष्य सामूहिक आत्म-हत्या की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। नशेबाजी जैसी दुष्प्रवृत्तियों की बढ़ोत्तरी देखते हुए कथन कुछ असम्भव नहीं लगता। स्नेह सौजन्य और सहयोग के अभाव में मनुष्य पागल कुत्तों की तरह एक-दूसरे पर आक्रमण करने के अतिरिक्त और कुछ कदाचित ही कर सके। [1]

मनुष्य जाति आज जिस दिशा में चल पड़ी है, उससे उसकी महत्ता ही नहीं, सत्ता का भी समापन होते दीखता है। जब प्रतिभाएँ सो जाती हैं तो देश-समाज-संस्कृति का पतन पराभव आरंभ हो जाता है। जब वे जाग उठती हैं तो प्रवाह को उलट कर घनघोर तमिस्रा में से भी अरुणोदय का सा प्रकाश उदित कर दिखाती हैं। अत: युग मनीषा को जागृत करना एवं नवसृजन में नियोजित कर देना वर्तमान युग की महती आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति में इस हेतु विभिन्न विधाएँ वर्णित हैं - इनमें से एक अति महत्वपूर्ण विधा है अश्वमेध यज्ञ। इस संदर्भ में, अश्वमेध यज्ञ, जो गायत्री परिवार-प्रज्ञा अभियान-युग निर्माण योजना द्वारा विश्व भर में संपन्न किए जा रहे हैं, के मूल में एक ही तथ्य है - देव संस्कृति को विश्व संस्कृति बनाना, विश्व राष्ट्र की कल्पना को साकार रूप देना। प्रस्तुत धर्मानुष्ठान व उसके मूल में छिपे तत्वज्ञान की विवेचना से वह आधार भूमि तैयार होती है जिस पर इक्कीसवीं सदी रूपी भवन की स्थापना संभव हो सकती है; इसी संदर्भ में, वर्तमान शोध पत्र में, दो सहस्र वर्षों बाद के प्रथम व्यापक एवं सांस्कृतिक अश्वमेध यज्ञ का एवं गायत्री परिवार द्वारा किए गए जयपुर में सम्पन्न हुए प्रथम अश्वमेध यज्ञ जयपुर का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

अश्वमेध यज्ञ महत्व

शतपथ ब्राह्मण के 1/10/14 में कहा गया है- यज्ञों भुवस्य नाभि: [2] अर्थात्- यज्ञ संसार की धुरी है, उसी के सहारे विश्व ब्रह्माण्ड का गतिचक्र घूमता हैं। यज्ञ का तत्वदर्शन उदारता, पवित्रता, सहकारिता का त्रिवेणी पर केन्द्रित है । यही तीन तथ्य ऐसे हैं जो इस विश्व को सुखद, सुन्दर और समुन्नत बनाए हुए हैं। ग्रह नक्षत्र पारस्परिक आकर्षण में बँधे हुए ही नहीं हैं, एक दूसरे को महत्वपूर्ण आदान-प्रदान भी करते है । परमाणु और जीवाणु जगत भी इन्हीं सिद्धान्तों के सहारे अपनी गतिविधियाँ सुनियोजित रीति से चला रहे है। सृष्टि, संरचना, गतिशीलता और सुव्यवस्था में संतुलन - इकोलॉजी का सिद्धान्त ही, सर्वत्र काम करता हुआ दिखाई पड़ता है। शरीर के अवयव एक दूसरे की सहायता करके जीवनचक्र को घुमाते है। समाज संरचना के आधार पर अर्थतन्त्र, शासनतन्त्र तथा दूसरे प्रगतिक्रम चलते है। यह यज्ञीय परम्परा ही है, जिसके कारण जड़ और चेतन दोनों ही अपना सुव्यवस्थित रूप बनाए हुए है। इसी से यज्ञ तत्व को विश्व की नाभि-धुरी कहा गया है।

व्यापक रूप से यज्ञीय प्रयोगों में समाज में सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के लिए वाजपेय, राजनीतिक अनुशासन स्थापित करने के लिए -राजसूय यज्ञ' तथा समग्र राष्ट्र को संगठित सशक्त एवं प्रगतिशील बनाने के लिए 'अश्वमेध', आदि यज्ञों का वर्णन मिलता है।

अश्वमेध को इन यज्ञों में सर्वश्रेष्ठ - यज्ञों का राजा - कहा गया है। शास्त्रकार का कथन है अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने से गया जाने का पुण्यफल, गंगा यमुना स्नान का पुण्यफल तथा कोटि होम करने का पुण्यफल मिलता है। मत्स्य पुराण [3]

इमा नु कं भुवना सीशघामेन्द्रष्च विष्वे च देवाः।
आदित्यैरिन्दः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेशजा करत्।
यजु 24-46 [4]

अश्वमेध यज्ञ से यह सम्पूर्ण भुव निश्चय ही सुख प्राप्त करते है। गण के सहित इन्द्र और सम्पूर्ण देवता, बारह आदित्य उनचास मरुतों के साथ औषधि को हितकारी करते हैं।

अश्वमेध यज्ञ पर्यावरण संतुलन, ऐश्वर्यवान, इंद्रियजयी, निरोगी शरीर और सन्तानों को श्रेष्ठ गुण सम्पन्न बनाते है। महीधर भाष्य [5]

सर्वानह बैकामान आप्नोति।
यो अष्वमेधेन यजते॥
शतपथ 13-4-9-9 [6]

जो अश्वमेध का यजन करते है उनकी सभी कामनायें पूर्ण

होती है।

यज्ञेनाष्वेधेनायु: कल्पताम.......॥ महीधर भाष्य 22-23 [7]

अश्वमेध यज्ञ से आयु की वृद्धि होती है।

राष्ट्रं वै अश्वमेध:, तस्माद्राप्ट्री अश्वमेधेन यजेत्।

अर्थात्-राष्ट्र ही अश्वमेध है, इसीलिए अश्वमेध के माध्यम से राष्ट्र का यजन (संगतिकरण संगठन) करें।

वैदिक काल - पूर्व में हुए अश्वमेधों के प्रभाव को समझाने के लिए कुछ उदाहरण दिए जा सकते हैं।

जब भगवान राम ने अपने अश्वमेध यज्ञ के बारे में वामदेव-जाबाल-कश्यप आदि ऋषिगणों से चर्चा की (बा. राम उत्तरकांड 94/7 [8]), तो वे ऋषि रामचन्द्र जी की वाणी का श्रवण कर भगवान शिव को प्रणाम कर, अश्वमेध यज्ञ की प्रशंसा इस प्रकार करते हैं -

कुरु कुरु महाभाग धर्मारण्ये त्वमुत्तमम्।
दिने-दिने कोटि गुणं यावर्द्धष शतं भवेत्।
(स्क. पु. 3/35/14) [9]

हे महाभाग रामचन्द्र जी! आप इस धर्मारण्य में उत्तम यज्ञानुष्ठान कीजिए। इस यज्ञ के प्रभाव से स्थल की पवित्रता सौ वर्ष तक बढ़ती चली जाएगी, जो मनुष्यों में कोटि-कोटि कोटि सद्गुणों का विकास और वृद्धि करती रहेगी।

एक अन्य उदहारण में अश्वमेध से जन मानस पर पड़े व्यापक प्रभाव को समझा जा सकता है। काषिराज दिवोदास ने ब्रह्माजी के कथन को स्वीकार कर यज्ञ सामग्री इकट्ठी की। जिसकी सहायता से ब्रह्माजी ने अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किए, उस दिन से वाराणसी में दशाश्वमेध नाम से वह तीर्थ प्रख्यात हुआ। पहले उसका नाम रुद्र सरोवर था। दस अश्वमेध करने से ही उसका नाम दशाश्वमेध तीर्थ हुआ। -स्क. पु. 4/52/68/69 [10]

गर्ग संहिता अश्वमेध खण्ड 10/7 में भगवान् कृष्ण द्वारा उग्रसेन से अश्वमेध सम्पन्न कराने का वृत्तांत मिलता है [11]]। उन्हीं की प्रेरणा व व्यास के कथन के उपरान्त सम्राट युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध सम्पन्न किए जाने के विवरण महाभारत अश्वमेधिक पर्व 71/14 में मिलता है [12]। इस विवरण के अनुसार युधिष्ठिर ने तीन अश्वमेध सम्पन्न किए।

अश्वमेध यज्ञ का इतिहास

देव संस्कृति के अध्ययन एवं अन्वेषण के लिए समर्पित पश्चिमी इतिहासकार ए-आर- बाशम के ग्रन्थ ‘द वन्डर दैट वाज इण्डिया’ के पृष्ठ बताते हैं कि संसार के विभिन्न भू भागों के निवासियों में, यदि कहीं के लोगों ने अपने राष्ट्र को देवता और उपास्य माना है, तो वह देश भारत है। [13]

देवभूमि भारत के स्वर्णिम अतीत के निर्माण में जो प्रक्रियाएँ क्रियाशील रहीं हैं-अश्वमेध उनमें से विशिष्टतम है। इसी की उपलब्धियों-सत्परिणामों की गौरवानुभूति देशवासियों को जगतगुरु एवं ज्ञान-विज्ञान के चक्रवर्ती के रूप में हो सकी थी।

एमिल बेनवेनिस्ते के शोध अध्ययन “वैदिक इण्डिया” के अनुसार अश्वमेध राष्ट्रीय उपासना की वैदिक पद्धति के रूप में प्रचलित थी। इसे एक अनुष्ठान का रूप दिया गया था जिसे शासक श्रोत्रिय (मनीषी) और जन समूह सभी मिल-जुल कर सम्पन्न करते थे। [13]

कतिपय इतिहासकारों ने अश्वमेध को-राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया माना है। इतिहासविद् सी.ए. ब्रौंसके अपने अध्ययन “ए हिस्ट्री ऑफ हिस्टोरिकल राइटिंग” में इस मान्यता को इतिहासकार की उथली दृष्टि करार देते हैं। उनके मुताबिक राष्ट्र-और विश्व के राजनीतिक एकीकरण के प्रयास वर्तमान युग में भी किए गए हैं, किए जा रहे हैं। मध्यकाल में हुए 80 से ज्यादा अश्वमेध यज्ञ [14] वैदिक युग के वर्णित अश्वमेधों में उनके उन सुखद परिणामों की वैसी अनुभूति कभी नहीं हुई जैसी वैदिक भारत के निवासी अश्वमेध अनुष्ठान में किया करते थे। [13] समुद्रगुप्त के बाद, मध्यकाल में, जिन राजाओं द्वारा अश्वमेध सम्पन्न करने के विवरण मिलते हैं, वह वस्तुतः चिन्ह पूजा मात्र है। उनमें न तो साँस्कृतिक वैभव है न भावात्मक विस्तार और न जन-जीवन को जीवन बोध करा सकने की सामर्थ्य। अश्वमेध यज्ञ का सबसे बड़ा फलितार्थ है - प्रसुप्त पड़ी प्रतिभा का जागरण, जो जनमानस का कायाकल्प करें और राष्ट्र का नवनिर्माण करें। यह प्रक्रिया ही अश्वमेध की सफलता का मापन है।

महाभारत काल में जनमेजय द्वारा अश्वमेध सम्पन्न किये जाने के बाद से अश्वमेध की परम्परा अस्त व्यस्त हो गई। राजा पुष्यमित्र के बाद भारत की दृढ़ स्थिति अग्निमित्र वसुमित्र तक बनी रही। बाद में काल प्रवाह में इसकी कड़िया बिखरीं जिन्हें सँजोने सँवारने का अश्वमेध पराक्रम सम्राट चन्द्र गुप्त प्रथम के पुत्र तथा गुप्त वंश के द्वितीय सम्राट समुद्र गुप्त ने किया। उन्होंने अश्वमेध अनुष्ठान के द्वारा समतट, डुवाक, कामरुप, नैपाल, कर्तपुर, पूर्वी एवं मध्य पंजाब, मालवा तथा पश्चिमी भारत के गण राज्यों, कुषाणों और शकों को एकता का शिक्षण दिया। अश्वमेध के प्रभाव से समूचा दक्षिण एकता सूत्र में बँधे बिना न रह सका।

अश्वमेध महायज्ञों की गायत्री परिवार की श्रृंखला और उसका प्रथम अश्वमेध महायज्ञ, सम्राट समुद्र गुप्त (दो सहस्त्र वर्षों) के बाद किया गया पहला वास्तविक, वैदिक उद्देश्यों को सम्पर्पित, और व्यापक प्रभाव वाला, सफल प्रयास समझा जा सकता है, जिसे इस आलेख में आगे दिए गए यज्ञ के याज, प्रयाज, अनुयाज द्वारा समझा जा सकता है।

अश्वमेध महायज्ञ श्रृंखला की प्रेरणा–घटना

प्रसुप्त पड़ी प्रतिभा का जागरण, मनुष्य में देवत्व का उदय, जनमानस का कायाकल्प, राष्ट्र का नवनिर्माण - यह वैदिक संस्कृति, भारतीय संस्कृति, देव संस्कृति का मूल उद्देश्य है। यह प्रक्रिया सफल अश्वमेध के माध्यम से ही संपन्न होती है। अखिल

विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के मनुष्य में देवत्व के उदय स्वप्न को साकार करने के लिए, उनके स्थूल शरीर के प्रयाण के बाद, गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा जी ने अपनी 1992 की हिमालय यात्रा के बाद, देव संस्कृति दिग्विजय अश्वमेधिक अभियान का उद्घोष किया और अपने संरक्षण में क्रियान्वित किया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार एक बृहद आध्यात्मिक संस्था है। सन 2024 तक 47 अश्वमेध गायत्री परिवार द्वारा संपन्न हो चुके हैं। अश्वमेध के उद्देश्य को समर्पित यह देव संस्कृति दिग्विजय अभियान की प्रेरणा इस शोध का मुख्य बिंदु है। दो सहस्त्र वर्षों बाद उस प्रयास को जीवित करना और मनुष्य जाति के उत्थान के लिए समर्पित इस अश्वमेधिक महायज्ञ की श्रृंखला के शुरू होने के पीछे की घटना-प्रेरणा एक महत्वपूर्ण शोध का विषय है।

माता भगवती देवी शर्मा जी (परम वन्दनीया माताजी) की हिमालय यात्रा का स्थान गंगोत्री एवं भागीरथी शिला था। “हिमशिखरों के मध्य पहुंचकर माताजी के भावों में एक अनोखा परिवर्तन झलकने लगा। उनके दीप्त मुखमंडल पर आनंद की रेखाएं सघन हो गईं। कई स्थानों पर वह रुकीं और ध्यानस्थ हो गईं। गंगोत्री के पास भागीरथ शिला पर तो वह काफी देर ध्यानमग्न बैठी रहीं। यहां पर जब वह ध्यान से उठीं, तो उनके चेहरे पर कुछ विशेष पाने की प्रसन्नता की प्रदीप्ति थी।” यहीं से उन्होंने अपनी यात्रा को विराम दिया और शांतिकुंज वापस लौट आईं। [15]

वापस लौटने पर उन्होंने एक भव्य शपथ-समारोह में राष्ट्रव्यापी अश्वमेध महायज्ञों की घोषणा की। यह घोषणा करते समय उन्होंने बताया कि हिमालय ने उन्हें यही संदेश दिया है। “हिमालय में निवास करने वाली दिव्य शक्तियों का यही आग्रह है कि राष्ट्र को समर्थ एवं सशक्त बनाने वाले अश्वमेध महायज्ञ का महानुष्ठान किया जाए।” इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि इन महायज्ञों में वह स्वयं जाएंगी। इसी के साथ परम वन्दनीया माताजी ने जयपुर के प्रथम अश्वमेध के लिए अपनी यात्रा प्रारंभ की। उनका यह क्रम भिलाई (म.प्र.), गुना (म.प्र.), भुवनेश्वर (उड़ीसा), लखनऊ (उ.प्र.), बड़ौदा (गुजरात), भोपाल (म.प्र.), नागपुर (महाराष्ट्र), ब्रह्मपुर (उड़ीसा), कोरबा (म.प्र.), पटना (बिहार), कुरुक्षेत्र (हरियाणा) एवं चित्रकूट (उ.प्र.) आदि स्थानों में हुएं अश्वमेध महायज्ञों में भी जारी रहा। [15]

चुनौतियाँ और पूर्व तैयारियाँ

अश्वमेध महायज्ञ अभियान में प्रथम अश्वमेध अपना विशिष्ट स्थान रखता है क्योंकि दो सहस्र वर्षों से बंध पड़ी विधा को एवं कड़ी को जोड़ना एक कष्टसाध्य प्रक्रिया थी। दैवीय अनुग्रह के साथ-साथ कर्मकांड को तैयार करना, संसाधन जुटाना, स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण, जन-मानस को तैयार करना एवं उसके उद्देश्यों के अनुरूप उसका विस्तार एवं प्रभाव हो, उस हेतु समस्त योजना को क्रियान्वित करना एक असंभव कार्य था। यह एक गहन शोध का विषय है कि एक संगठन संचालिका के रूप में परम वंदनीया माताजी के सामने क्या चुनौतियाँ थीं एवं उन्हें कैसी तैयारियाँ करनी-करवानी पड़ीं। यहाँ पर शोध पत्र की सीमा को देखते हुए, कुछ मुख्य बिंदुओं को लिया जा रहा है।

1. अश्वमेधिक कर्मकांड की टूटी कड़ी को जोड़ना [15, 16]

अश्वमेध यज्ञों का राजा है, इसे करवाना सनातन संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसे करने के लिए भारत के विद्वानों के समर्थन एवं चुनौतियों का सामना करना और योजना को सही रूप में क्रियान्वित करना चुनौती का बड़ा हिस्सा था। अश्वमेध के कर्मकांड को तैयार करवाना एक ऋषि स्तर का चिंतन एवं पुरुषार्थ था। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के निर्देशों एवं संकेतों के आधार पर और साधना-परंपरा से मिले अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने इस हेतु शांतिकुंज (गायत्री परिवार का मुख्यालय) में वेद विभाग की स्थापना की। जर्मनी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी और प्रमुख स्थानों से पंडित चंद्रभूषण जी को भेजा और वेद विभाग की स्थापना करवाई। परम वंदनीया माताजी ने अपनी देखरेख में इस महायज्ञ का कर्मकांड तैयार करवाया।

2. तर्क–तथ्य–प्रमाण की आधारशिला रखना

परिजनों को इसकी विस्तृत जानकारी देने के लिए और तर्क-तथ्य-प्रमाण के आधार पर अखण्ड ज्योति पत्रिका की संपादक-मंडली से अखण्ड ज्योति का एक संपूर्ण विशेषांक (नवंबर 1992) तैयार करवाया और वैचारिक-विद्वान जगत में इस महा अभियान की आधारशिला रखी।

3. संकल्पित व्यक्तित्वों को तैयार करना

इस कार्यक्रम के लिए वैदिक संस्कृति को जीने वाले समर्पित समयदानियों की आवश्यकता पड़ी। जिस हेतु परम वंदनीया माताजी ने एक भव्य शपथ-समारोह करवाया और राष्ट्रव्यापी अश्वमेध महायज्ञों की विधिवत घोषणा की।

4. जनमानस को प्रभावित करने वाले गीत–संगीत तैयार करवाना

भारतीय जनमानस को जाग्रत करने के लिए अश्वमेध प्रज्ञा गीतों की श्रृंखला तैयार करवाई। भारतीय समाज में तब के दशक में गांव-गांव के जनमानस पर स्थायी प्रभाव और संदेश देने के लिए संगीत की दिव्यता ही सशक्त माध्यम था। इस हेतु प्रभावशाली और ऐतिहासिक गीत लिखवाए, जो आज भी लोगों को देव संस्कृति के लिए राष्ट्र उत्थान के लिए उनमें देवत्व जागृत करते हैं और प्रेरणा उत्पन्न करते हैं। इन प्रज्ञा गीतों में जिन स्थानों में अश्वमेध होना था, उन स्थानों के ऐतिहासिक तथ्यों को भी सम्मिलित करवाया गया जिससे जनमानस से जुड़कर उनकी चेतना जगाई जा सके।

5. अश्वमेधिक यज्ञ की शास्त्रीय विशेषता के अनुरूप व्य–वस्था

यज्ञ के दौरान उपयोग में आने वाले शास्त्रीय विधानों के अनुरूप अश्वमेध यज्ञ के व्यापक कर्मकांड के साथ-साथ ही कुण्डों के निर्माण, मंडप के निर्माण, यज्ञ करने वाले पुरोहितों की मंडली का निर्माण और प्रशिक्षण, सांस्कृतिक-मंच, विचार-मंच, इत्यादि की व्यवस्था बनवाई गई।

6. पुरोहित एवं यजमान को विशिष्ट ऊर्जा के संवाहक हेतु तैयार करवाना

यज्ञीय आयोजन केवल स्थूल उद्देश्यों के लिए किए गए आयोजन नहीं होते। इसमें भी अश्वमेध जैसे आयोजन तो वातावरण को प्रभावित करने के लिए किए गए अति सूक्ष्म प्रयोग होते हैं। अश्वमेध यज्ञ कर्मकांड करने वाले पुरोहित और यजमान को विशिष्ट ऊर्जा के संवाहक के रूप में कार्य करना होता था। इस हेतु परम वंदनीया माताजी ने अश्वमेध के देव-आवाहन में बैठने वाले सारे गृहस्थ जोड़ों से कुटी प्रवेश साधना करवाई। इस हेतु उन्हें शांतिकुंज बुलाकर नौ दिवस एक कुटी में अलग जल-भोजन-सोने की व्यवस्था के साथ विशिष्ट साधना करवाई।

7. गांव–गांव के जनमानस को जोड़ना–जागृत करना

परम वंदनीया माताजी ने जिन क्षेत्रों में अश्वमेध होना था, उनमें आयोजनों की व्यापक विधि-व्यवस्था बनवाई, जिसको नीचे याज, प्रयाज, अनुयाज के रूप में दिया गया है। साथ ही आयोजन के मूल उद्देश्य को पूरा करने के लिए जन-संचार का ऐसा मॉडल बनवाया जिसके द्वारा जनमानस को सही दिशा में मोड़ा जा सके। जैसे कि स्थानीय और प्राचीन तीर्थों की जल-रज लाना, संदेश पहुँचाना इत्यादि।

गायत्री परिवार द्वारा जयपुर में सम्पन्न हुआ प्रथम अश्वमेध यज्ञ के प्रयाज, याज, अनुयाज का विस्तृत वर्णन आगे दिया जा रहा है।

अश्वमेध महायज्ञ जयपुर का प्रयाज (पूर्व तैयारी)

अश्वमेध यज्ञ के लिये प्रयाज के रूप में दिग्विजय यात्रा की जाती है। यज्ञ की सफलता के लिये विशेष रूप से गायत्री उपासना साधना करने वाले व्यक्ति लाखों की संख्या में तैयार किए जाते हैं।

1. ग्राम प्रदक्षिणा एवं आमंत्रण

सर्वप्रथम जहाँ अश्वमेध महायज्ञ होना है, उस क्षेत्र के सभी मूर्धन्यों की गोष्ठी सम्पन्न की जाती है। उन्हें ताल्लुका, तहसील स्तर अथवा पंचायत स्तर तक की क्षेत्रीय जिम्मेदारियाँ बाँटी जाती हैं। एक केन्द्रीय कार्यकारिणी बना दी जाती है, जो समूची अश्वमेध व्यवस्था का संचालन करती है। जयपुर-राजस्थान क्षेत्र हेतु भी यही किया गया।

जिन तैंतीस हजार लोगों ने शपथ समारोह के समय समयदान दिया था, उन सबके इस कार्यक्रम में नियोजन के पश्चात, उन्हें इन क्षेत्रीय केन्द्रों पर आवश्यक विज्ञप्तियों तथा प्रचार सामग्री एवं उपकरणों सहित भेजा गया। स्थानीय लोगों ने पहले से ही ग्राम प्रदक्षिणा के मार्ग और तिथियाँ निर्धारित कर ली थीं। उसी के अनुसार इन परिव्राजकों के द्वारा गाँव-गाँव पहुँच कर देवसंस्कृति की स्थापना का पावन कार्य सम्पन्न किया गया।

स्थानीय समयदानी और शांतिकुंज से गये परिव्राजक चार-चार या पाँच-पाँच की टोलियों में विभक्त हो कर साइकिलों से निकले। गीत गाते, नारे लगाते हुये इन लोगों ने एक दिन में एक, दो या तीन गाँवों की प्रदक्षिणा की। पहले गाँव में गीत गाते हुये प्रदक्षिणा कर के लोगों को सायंकाल, पूर्व निर्धारित स्थान पर सम्मिलित होकर, दीपयज्ञ में भाग लेने और अश्वमेध का संदेश सुनने के लिये आमंत्रित किया गया।

2. गाँव की मिट्टी पूजन एवं संस्कारो का जागरण

फिर गाँव के किसी पवित्र स्थान पर मिट्टी पूजन करने का प्रावधान हुआ। इसी स्थान से थोड़ी सी रज लेकर अश्वमेध महायज्ञ के कुण्ड बनाने के लिये भेजी जाती है। इसी स्थान पर वृक्षारोपण होता है। गाँव वालों से यह प्रार्थना की जाती है कि वे उस स्थान पर एक संस्कार चबूतरा या ग्राम देवता की स्थापना कर लें, जहाँ पर्व त्योहार, सार्वजनिक उत्सव, और बच्चों के संस्कार सम्पन्न कराने का क्रम प्रारम्भ करें। जिससे संस्कारों के प्रचलन की एक व्यवस्थित श्रृंखला प्रारंभ हो सकें।

वहाँ प्रज्ञा मंडल भी स्थापित किए, ताकि यह संस्कार मात्र उत्सव हो कर न रह जाएँ, अपितु उनके द्वारा व्यक्तित्व परिष्कार के उद्देश्य पूरे किए जा सकें; आने वाली पीढ़ी को जीवन दर्शन का व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलता रहे।

सायंकाल दीप यज्ञ होता था। उसमें उपस्थित जन समुदाय से देव दक्षिणा माँगी जाती थी। 'देवदक्षिणा' अर्थात् अपने जीवन की किसी एक बुराई का परित्याग और एक अच्छाई का वरण। यह संकल्प वे लिखित रूप में देते थे ताकि बाद में उन्हें सतत् अनुपालन की प्रेरणा भी दी जाती रहे। इसी सभा में अश्वमेध महायज्ञ के आमंत्रण भी दिए जाते थे।

3. तीर्थ परिक्रमा

प्रयाज के क्रम में विभिन्न तीर्थों की 'तीर्थ परिक्रमा' भी करी गई थी एवं वहाँ की थोड़ी सी रज भी अश्वमेध महायज्ञ हेतु लाई गई थी। प्राचीन काल में तीर्थ और देवालय मानवीय मेधा को धर्मपरायण बनाए रखने का दायित्व निभाते थे। वहाँ न केवल उपासना, कथा–कीर्तन, सत्संग के प्रावधान नियत थे, अपितु आरण्यक परम्परा की अन्तर्मुखी योग साधनाएँ भी कराई जाती थीं। इनका संचालन सिद्धों, समर्थों एवं विद्वान तत्वदर्शियों के द्वारा हुआ करता था। जयपुर के अश्वमेध में इस सत्य का ध्यान रखते हुएँ उन तीर्थों की रज भी लाइ गई थी। [17]

अश्वमेध महायज्ञ जयपुर का याज (आयोजन के दौरान)

1. जन श्रद्धा का ज्वार

आश्वमेधिक श्रृंखला के अन्तर्गत निर्धारित प्रथम अश्वमेध यज्ञानुष्ठान में जन श्रद्धा का ऐसा ज्वार उभरा था कि सभी उल्लसित और जन-जन अचंभित हो गए थे। राजस्थान के सामान्य ग्रामीण से लेकर प्रान्त के मुख्यमंत्री, मुख्य न्यायाधीश, एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उसमें श्रद्धा-पूर्वक भाग लिया था।

प्रयाज में की गई ग्राम प्रदक्षिणा एवं तीर्थ प्रदक्षिणा ने हर क्षेत्र एवं हर वर्ग के नर-नारियों की श्रद्धा को इस कार्यक्रम के साथ जोड़ दिया था। राजस्थान के 33 हजार गाँवों में से लगभग 30 हजार गाँवों तक अश्वमेध का आमंत्रण पहुँचाया गया था । 80 हजार से अधिक व्यक्ति जयपुर के बाहर से यज्ञार्थ पधारे थे ।

2. अश्वमेध महायज्ञ का स्थान एवं व्यवस्थाएँ

जयपुर अश्वमेध में सारी व्यवस्थायें मानसिंह स्टेडियम के आसपास रखी गई थीं। यज्ञशाला, यज्ञ मंडप, संस्कारशाला, प्रवचन पंडाल तथा अधिकांश आवास स्थल भी स्टेडियम के आसपास ही थे। विशिष्ट अभ्यागतों के लिए तथा यज्ञ व्यवस्था में समयदान, श्रमदान करने वालों के लिए स्कूल, धर्मशालाएँ एवं पक्के स्थानों में आवास प्रबन्ध किए गए थे। कन्ट्रोल रूम स्टेडियम से बाहर, उसी से सटा हुआ रखा गया था, ताकि अपने परिजन वहाँ पहुँच कर प्रवेश पत्र प्राप्त कर सकें।

3. समारोह

समारोह का प्रारम्भ 06 नवम्बर 1992 को 'तीर्थ परिक्रमा' से वापसी के साथ हुआ था। गंगामाता मंदिर के निकट तीर्थ परिक्रमा यात्रा के स्वागत की भव्य तैयारी की गई थी। 1100 से अधिक कलश लेकर मातृशक्तियों ने उनका अभिनन्दन किया था। शोभायात्रा बहुत भव्य थी। नगर के मुख्य भागों से निकलते हुए यह यात्रा रामलीला मैदान पहुँची थी। तीर्थ परिक्रमा के स्वागत के पश्चात पुष्कर एवं जयपुर की शोभायात्राओं ने सम्मिलित होकर समूचे जयपुर नगर की परिक्रमा करी थी। उसमें छोटे-बड़े सभी वाहन विभिन्न झाँकियाँ लेकर चले थे। गायन-वादन भी हुआ था, नारे लगाए गए थे। नगर परिक्रमा के पश्चात शोभा यात्रा सायंकाल पाँच बजे यज्ञस्थल पहुँची थी, जहाँ तीर्थों से आए जल रज के पूजन आरती के साथ यात्रा का विसर्जन किया गया था। पूजन आरती के साथ तीर्थों से आए जल रज को सजल श्रद्धा - प्रखर प्रज्ञा (संस्थापक-संस्थापिका के समाधी-स्मारक की प्रतिरचना) की भव्य झाँकी के पास स्थापित कर दिया गया था। सजल श्रद्धा - प्रखर प्रज्ञा की छतरियाँ, बिना मिट्टी के प्रयोग के, सरसों उगाकर बनाई गई थीं। यह झाँकी एवं संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के जीवन दर्शन की प्रदर्शनी पूरे कार्यक्रम में आकर्षण एवं श्रद्धा का केन्द्र बनी थी। परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी (वन्दनीया माताजी) हरिद्वार से जयपुर ७ नवम्बर को अपराह्न ११.३० पर पहुँचीं| [17]

4. देव आवाहन पूजन

07 नवम्बर 1992 को प्रातःकाल से ही पूर्व निर्धारित 1000 से अधिक साधक दम्पत्तियों ने यज्ञशाला में स्थान ग्रहण कर लिया था। भावनाजों और प्रेरणाओं से परिपूर्ण टिप्पणियों सहित वेदमंत्रों, गेयमंत्रों तथा हिन्दी स्तुतियों के संगम ने कार्यक्रम में ऐसी दिव्यता भर दी कि अनास्थावान भी दिव्य प्रवाहों का अनुभव करने लगे। किन्हीं को रोमांच हो रहा था तथा किन्हीं की आँखें गीली हो रही थीं। वन्दनीया माताजी के देवमंच पर पहुँचने पर पूजन में और भी दिव्यता आ गई। यज्ञीय यज्ञाश्व का अनुष्ठानपूर्वक परिचय कराया गया। सायंकाल संगीत प्रवचन के क्रम में डॉ० प्रणव पण्ड्या जी तथा बहिन शैलबाला पण्ड्या जी के प्रवचन हुए।

5. प्रतिभागियों की संख्या

पहले दिन लगभग 50 से 60 हजार नर-नारियों ने यज्ञ किया तथा लगभग उतने ही केवल परिक्रमा कर के गए। अगले दिन संख्या बढ़ी - लगभग 60 हजार से अधिक लोगों ने यज्ञ किया, तथा अतिरिक्त एक लाख से अधिक दर्शनार्थ पहुँचे। कार्तिक पूर्णिमा के दिन अथाह भीड़ उमड़ पड़ी। अंतिम दिन २ से ४ बजे तक विसर्जन विदाई आदि के क्रम चले। रात्रि १२ बजे तक लोग प्रदर्शनी एवं यज्ञशाला के दर्शनों में लगे रहे। बाद में श्रद्धालुओं ने यज्ञशाला की धूल, मेखला की मिट्टी को भी यज्ञ प्रसाद के रूप में रख लिया।

6. संस्कार महोत्सव

अश्वमेध महायज्ञ में दो–दो दिन के षोडश संस्कार महोत्सव संपन्न हुए। जयपुर अश्वमेध महायज्ञ में कार्यकर्ताओं ने ब्रह्मभोज के रूप में बड़ी मात्रा में सत्साहित्य (युग साहित्य), आधी कीमत में श्रद्धालुओं को उपलब्ध कराया था।

7. विशिष्ट उपलब्धि

एक अन्य उपलब्धि में, जयपुर अश्वमेध प्रवास के दौरान, 8 नवम्बर रविवार को प्रातः 11.15 पर, जयपुर वह पहली शक्ति-पीठ बन गई, जिसका भूमिपूजन संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने किया व प्राण प्रतिष्ठा वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी ने करी। [17]

अश्वमेध महायज्ञ का अनुयाज (आयोजन के पश्चात)

जयपुर की प्रारंभिक गोष्ठियों के निष्कर्ष यह बताते हैं कि जनमानस, परिवर्तन के लिए, किस उत्साह से संघबद्ध होता गया। जयपुर का अश्वमेध महायज्ञ एक भव्य आयोजन के रूप में संपन्न हुआ था। शाँतिकुँज के सौ से अधिक कार्यकर्ता, राजस्थान व अन्य प्रान्तों के पाँच हजार से अधिक कर्मठ परिजन सघन स्तर पर तैयारियों में जुटे रहे थे।

अश्वमेध महायज्ञ की अनुयाज प्रक्रिया भी बहुत व्यापक थी। यज्ञ के माध्यम से सूक्ष्म जगत तथा साधकों याजकों में दिव्य प्रवाह, दिव्य ऊर्जा संचारित हुई थी उसका उपयोग मनुष्य मात्र के लिये उज्ज्वल भविष्य के निर्माणार्थ किये जाने के लिए अनुयाज के लक्ष्य भी रखे गए थे। जन जन के मनों में एवं स्वभाव में संव्याप्त कुसंस्कारों का उच्छेदन करना; समाज में फैली कुरीतियों, अनाचार, आदि को निरस्त कर के, उनके स्थान पर श्रेष्ठ सतयुगी परम्पराओं की स्थापना करना, आदि व्यापक लक्ष्य अनुयाज के निमित्त रखे गए थे।

1. प्रयाज के लक्ष्य

अश्वमेध के प्रभाव एवं उद्देश्य को आगे बनाये रखने के लिए अनुयाज के रूप में सारे साधको एवं कार्यकर्ताओं को राजस्थान क्षेत्र में लक्ष्य दिए गएँ थे की 1) पहला कार्य लोगों का ध्यान व्यक्ति परिवार और सामाजिक जीवन में व्याप्त बुराइयाँ, पीड़ा और पतन की परिस्थितियों की ओर खींचकर उन्हें बुराइयाँ छोड़ने और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए सहमत करना है, 2) सत्प्रवृत्तियों की फसल भविष्य में मुरझाने न पाए उसके लिए रचनात्मक उपायों का विस्तार करना है, 3) इन परिस्थितियों का नियमन नियंत्रण करने वाले समूचे तंत्र को जीवन्त बनाये रखना है, 4) देवत्व की सुगढ़ और संगठित शक्ति का प्रदर्शन करते रहना है। इन चारों तथ्यों की पूर्ति के लिए समूचा अश्वमेध तंत्र, जो “देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के अंतर्गत बनाया गया था, जो आज भी अपने लक्ष्य को पूरा करता हुआ, 47 अश्वमेध यज्ञ की उपलब्धि कर चुका है। [18]

2. प्रशस्ति पत्र से सन्मान – प्रेरणा

चौबीस-चौबीस हजार गायत्री महामंत्र जप के चार अनुष्ठान, और 24 हजार गायत्री मंत्र लेखन करने वाले साधक गणों ने इस अश्वमेध में भाग लिया। इस आयोजन से जुड़े ग्राम प्रदक्षिणा कार्यक्रम में दिन-रात प्रव्रज्या करने वाले, घर-घर अलख जगाने वाले, उसकी सफलता के निमित्त साधना करने वाले और रात-दिन एक करके वहाँ की व्यवस्थाएँ संभालने वाले कर्मवीर अश्वमेध के अविस्मरणीय अध्याय हैं। शाँतिकुँज हरिद्वार और युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि से निम्न प्रशस्ति पत्र दिए गए। [19]

यज्ञ वीर

अश्वमेध यज्ञ के लिए न्यूनाधिक तीन माह का समय देने वाले गाँव-गाँव, घर-घर प्रव्रज्या करने वाले तथा व्यवस्थाओं में विशिष्ट योगदान देने के लिए “यज्ञ वीर” उपाधि प्रदान की गई थी।

ज्ञान शिल्पी

कार्यकर्ता जो निरंतर ज्ञान-रथ, झोला-पुस्तकालय चलाते है और अपने इस संपर्क क्षेत्र को जिन्होंने विशेष रूप से अश्वमेध का संदेश दिया-अश्वमेधिक कार्यक्रमों से जोड़ दिया था उन्हें ज्ञान शिल्पी की उपाधि प्रदान की गई थी।

साधक शिरोमणि

इस अश्वमेध की सफलता के लिए सवा लक्ष गायत्री महामंत्र का जप, एक हजार गायत्री चालीसा के वितरण द्वारा गायत्री उपासना की प्रेरणा देने का कार्य करने वालों को यह प्रशस्ति पत्र दिया गया।

श्रद्धा–भूषण

घर-घर श्रद्धा का बीजारोपण करने के लिए न्यूनतम नमन वंदन जितनी उपासना के लिए गायत्री माता के चित्र की एक सौ घरों में देव-स्थापना एवं अश्वमेध घट स्थापित कराने वालो को यह प्रशस्ति पत्र दिया गया। जिन्होंने के साथ जहाँ चित्र स्थापना की थी वहां उन्हें नियमित गायत्री उपासना, गायत्री चालीसा अथवा प्रातःकाल देव-चित्र को नमन वंदन करने का संकल्प भी कराया था।

शत प्रेरक, सहप्रेरक

अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, युगशक्ति गायत्री (गुजराती व अन्य भाषाओं की) पत्र पत्रिकाओं के एक सौ सदस्य बनाने वालों को “शत-प्रेरक” तथा एक हजार सदस्य बनाने वालों को “सहस्र-प्रेरक” प्रशास्ति पत्र प्रदान किये गए थे।

निष्कर्ष युग मनीषा को जागृत करने एवं नवसृजन में नियोजित कर देने के उद्देश्य से, प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति में वर्णित विभिन्न विधाओं के अंतर्गत, वर्तमान शोध-पत्र में गायत्री परिवार द्वारा जयपुर में किए गए प्रथम अश्वमेध महायज्ञ का विस्तृत वर्णन किया गया है।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वन्दनीया माताजी द्वारा संचालित अश्वमेध अनुष्ठान, प्राचीनतम अश्वमेध प्रयोग का ही युगानुकूल संस्करण है। गायत्री महाविद्या के दीर्घकालीन प्रयोग से सदविचार सद्भाव का एक दिव्य प्रवाह जागृत किया गया है। जिसमे स्वार्थ एवं अंहकार की आपा-धापी में लगी बुद्धियों को यज्ञीय परमार्थ के संकल्प से युक्त बनाया जाता है। सूक्ष्मीकरण सावित्री साधना के अन्तर्गत अन्तरिक्ष में दिव्य मेधा महाप्रज्ञा का एक प्रचण्ड प्रवाह पैदा किया गया है जिससे उस मेधा को भजन भाव से ग्रहण और प्रयुक्त करने से ही प्रथम जयपुर के 'अश्वमेध' का अनुष्ठान सम्पन्न हुआ है और आगे के अश्वमेध यज्ञ संपन्न हो रहे है।

अश्वमेध यज्ञ के आयोजन की पूर्व तैयारी (प्रयाज) में आते हैं - बड़ी संख्या में नैष्ठिक साधकों का निर्माण जो इसके आयोजन में सहयोग करें एवं प्रतिभागिता करें, विभिन्न संस्कारित तीर्थों से जल रज का संकलन, जन-जन को इस यज्ञ के बारे में जागरूक करना एवं इसमें आमंत्रित करना। अश्वमेध यज्ञ के आयोजन के दौरान (याज) - यज्ञीय कर्मकाण्ड को कहते है। विभिन्न कार्यक्रम किए गए, जैसे यज्ञ, संस्कार, विचार गोष्ठी, आदि, एवं इनमें लाखों व्यक्तियों की प्रतिभागिता द्वारा जन जन को देव संस्कृति का बोध कराया जाता है। अश्वमेध यज्ञ के आयोजन के उपरांत (अनुयाज) एक व्यवस्थित योजना बनाई जाती है, जिससे इस यज्ञ में उत्पन्न ऊर्जा का सुनियोजन व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र निर्माण हेतु हो सके। जयपुर अश्वमेध यज्ञ में इन प्रक्रियाओं द्वारा

जान-मानस के उत्थान हेतु, उनमे परिवर्तन हेतु, देवत्व के जागरण एवं असुर वृत्तियों के निवारण हेतु प्रबल प्रयत्न जो हुए, वह इस आलेख का निष्कर्ष है। इस प्रकार यह देखा गया कि अश्वमेध यज्ञ वर्तमान समय की विभिन्न वैयक्तिक एवं वैश्विक समस्याओं के निवारण हेतु यह वैदिक अनुष्ठान आज भी एक सशक्त माध्यम के रूप में चरितार्थ हो रहा है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] Pt. Shriram Sharma. Parivartan ke mahan kshan. Yugnirman yojna, gayatri tapobhoomi Mathura. 2014.

[2] Saraswati Swami Sampurnanand. Shatpath bramhin, 1/10/14. Dayanand sansthan New–Delhi. 1973.

[3] Geetapress. Matasya Puran. Geetapress Gorakhpur. 2019.

[4] Sharma S, Sharma B, editors. Yajurveda Samhita 24–46. Revision. Yug nirman yojana vistar trust, Gayatri Tapobhumi, Mathura–281003; 2013.

[5] Vasudev Lakshman Shastri Pansikar. Shukla Yjurveda Samhita With Ved Dipa Bhashya Of Mahidhar And Uvatacharya Bhashya. Nirnay Sagar Press. 1929

[6] Saraswati Swami Sampurnanand. Shatpath bramhin, 13–4–9–9. Dayanand sansthan New–Delhi. 1973.

[7] Vasudev Lakshman Shastri Pansikar. Shukla Yjurveda Samhita With Ved Dipa Bhashya Of Mahidhar And Uvatacharya Bhashya, 22–23. Nirnay Sagar Press. 1929

[8] Valmiki. Shrimad Valmiki Ramayana, Uttarkand 94/7. Geetapress Gorakhpur. 2017. Available at https://archive.org/details/ shrimad–valmiki–ramayana–hindi–edition–valmiki/mode/2up

[9] Geetapress. Skand Puran 3/35/14. Geetapress Gorakhpur. 2019

[10] Geetapress. Skand Puran 4/52/68/69. Geetapress Gorakhpur. 2019

[11] Gargacharya. Garg Samhita, ashwamedha khand, 10/7. GeetaPress Gorakhpur. 2014

[12] Vyāsa. The Mahabharat ashwamedha Parva 71/14. Moradabad: Ram Krishna; 1905.

[13] Sharma B, editor. Akhand Jyoti. Mathura, India: Akhand Jyoti Sansthan. 1992; 11:p56–57

[14] Chandel, E. Performers and Sites of the Ashwamedha Yagya in Medieval India. Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal, 2024; 23:34—48. DOI: 10.36018/dsiij.23.340

[15] Maha Shakti ki lokyatra – akhand jyoti article Bramhavarchasva. Mahashakti ki lokyatra. Yug Nirman Yojna Press Gayatri Tapobhumi, Mathura. 2012

[16] Shrivastava: Ashwamedh Yagya Jaipur. Interview with: Shri Uday Mishra. Feb 14, 2024. Shantikunj, Haridwar.

[17] माता भगवती देवी शर्मा (सम्पादक)। प्रज्ञा अभियान पाक्षिक पत्रिका। शांतिकुंज हरिद्वार। 1992; 10:नवम्बर 15.

[18] Sharma B, editor. Akhand Jyoti. Mathura, India: Akhand Jyoti Sansthan. 1992; 11

[19] Sharma B, editor. Apano Se Apani Baat. Akhand Jyoti. Mathura, India: Akhand Jyoti Sansthan. 1993; 01:64–65